ISSN 2350 – 1065 MUKTANCHAL
वर्ष: 13, अंक : 51, जुलाई-सितंबर 2026

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

# मुक्तांचल

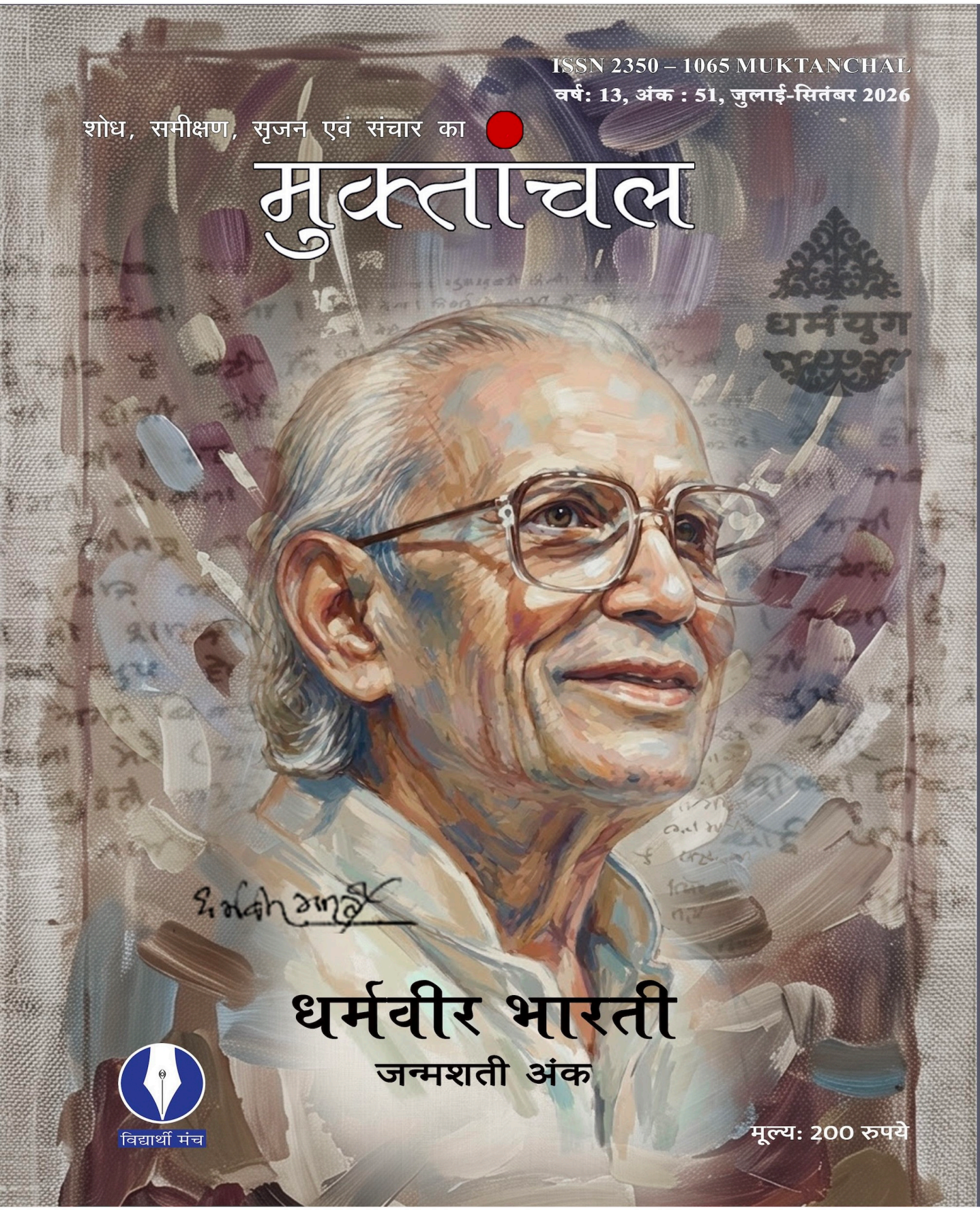


## धर्मवीर भारती

### जन्मशती अंक

विद्यार्थी मंच

मूल्य: 200 रुपये

# उस पार से ...

## थके हुए कलाकार से

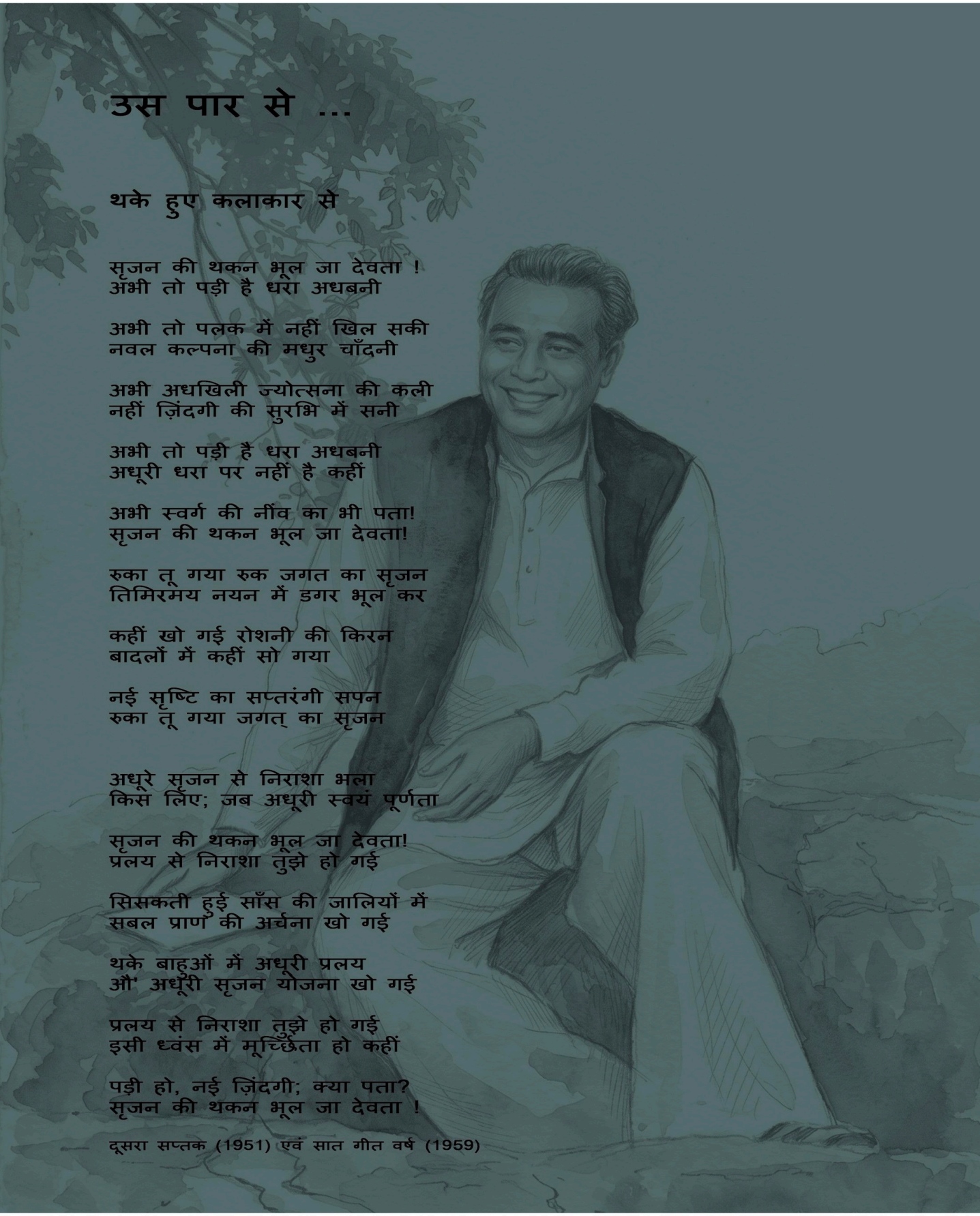

सृजन की थकन भूल जा देवता !
अभी तो पड़ी है धरा अधबनी

अभी तो पलक में नहीं खिल सकी
नवल कल्पना की मधुर चाँदनी

अभी अधखिली ज्योत्सना की कली
नहीं ज़िंदगी की सुरभि में सनी

अभी तो पड़ी है धरा अधबनी
अधूरी धरा पर नहीं है कहीं

अभी स्वर्ग की नींव का भी पता!
सृजन की थकन भूल जा देवता!

रुका तू गया रुक जगत का सृजन
तिमिरमय नयन में डगर भूल कर

कहीं खो गई रोशनी की किरन
बादलों में कहीं सो गया

नई सृष्टि का सप्तरंगी सपन
रुका तू गया जगत् का सृजन

अधूरे सृजन से निराशा भला
किस लिए; जब अधूरी स्वयं पूर्णता

सृजन की थकन भूल जा देवता!
प्रलय से निराशा तुझे हो गई

सिसकती हुई साँस की जालियों में
सबल प्राण की अर्चना खो गई

थके बाहुओं में अधूरी प्रलय
औ' अधूरी सृजन योजना खो गई

प्रलय से निराशा तुझे हो गई
इसी ध्वंस में मूर्च्छिता हो कहीं

पड़ी हो, नई ज़िंदगी; क्या पता?
सृजन की थकन भूल जा देवता !

दूसरा सप्तक (1951) एवं सात गीत वर्ष (1959)

शोध, समीक्षण, सृजन एवं संचार का

# मुक्तांचल

ISSN 2350-1065 MUKTANCHAL

पीयर रिव्यूड त्रैमासिक

संपादक : डॉ. मीरा सिन्हा वर्ष: 13, अंक: 51, जुलाई-सितंबर 2026

अतिथि संपादक : डॉ. धूपनाथ प्रसाद

प्रकाशक : विद्यार्थी मंच

प्रबंध संपादक : सुशील कुमार पांडेय

कला संपादक : शुभागता श्रीवास्तव

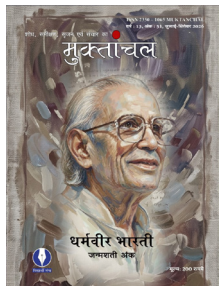


**आवरण : उत्सव सिन्हा**

**परामर्श एवं विशेष सहयोग :**

पंकज साहा : प्राक्तन अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

मृत्युंजय श्रीवास्तव : संस्कृतिकर्मी एवं विचारक

आशुतोष सिंह : कवि एवं व्यंग्यकार

धनेश दत्त पांडेय : कथाकार एवं आलोचक

गीता दूबे : प्राध्यापक, स्कॉटिश चर्च कॉलेज, कोलकाता

चित्रा माली : प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, कोलकाता

निशांत : काजी नजरूल विश्वविद्यालय आसनसोल

प्रकाश कु. अग्रवाल : सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, खड़गपुर कॉलेज, पश्चिम बंगाल

विनय कुमार मिश्र : प्राध्यापक, बंगवासी कॉलेज, कोलकाता

विजया सिंह : रानी बिड़ला गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता

उत्सव सिन्हा : वर्चुअल प्रोडक्शन स्पेसिअलिस्ट, मुंबई

**व्यवस्थापन एवं प्रबंधन**

विवेक लाल, विनीता लाल, सरिता खोवाला, परमजीत पंडित, नगीना लाल दास, रुद्रकांत झा एवं प्रीति सिंह

**संपर्क एवं प्रसार :**

विनोद यादव : 9007517546, पद्माकर व्यास : 9433196407

चांदनी सिन्हा (बर्मिंगम, यू०के०) : +447411412229

लेखकों से अनुरोध किया जाता है कि मुक्तांचल में प्रकाशन हेतु सामग्री यूनिकोड वर्ड (Unicode Word) या (Kurtidev 010) में भेजें।

पत्रिका में व्यक्त विचारों से संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं 'मुक्तांचल' से संबंधित सारे विवादों के लिए न्याय-क्षेत्र कलकत्ता उच्च न्यायालय होगा।

मुद्रक : **गाथा प्रकाशन,** 6/2/1, आशुतोष मुखर्जी लेन, हावड़ा - 711106

**पीयर रिव्यूड टीम :**

डॉ० धूपनाथ प्रसाद : प्राक्तन प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

डॉ० मंजु रानी सिंह : प्राक्तन प्राध्यापक, विश्वभारती, शांतिनिकेतन, पश्चिम बंगाल

डॉ० अरुण होता : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, स्टेट यूनिवर्सिटी, बारासात, पश्चिम बंगाल

डॉ० मनीषा झा : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर-बंग विश्वविद्यालय

डॉ० सत्या उपाध्याय : प्राचार्य, कलकत्ता गर्ल्स कॉलेज, कोलकाता

डॉ० अंजनी कुमार झा : प्राध्यापक, मीडिया स्टडीज, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार

डॉ० शुभ्रा उपाध्याय : अध्यक्ष, हिंदी विभाग, खुदीराम बोस सेंट्रल कॉलेज, कोलकाता

डॉ० सुनील कुमार 'सुमन' : प्राध्यापक, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.

डॉ. अमित राय : प्रभारी, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, कोलकाता

**मुक्तांचल :** A/C. 50200014076551, HDFC Bank BURRABAZAR, KOLKATA-700007. IFSC CODE-HDFC0000219

**संपर्क:**

**डॉ० मीरा सिन्हा (संपादक) : 9831497320**

**सुशील कुमार पांडेय : 9681105070**

ई-मेल muktanchalpatrika@gmail.com/ sinhameera48@gmail.com

पत्रिका का मूल्य : एक अंक 100 रुपये, विशेष अंक 200 रुपये

सदस्यता शुल्क : वार्षिक 1000 रुपये, आजीवन 5000 रुपये

संस्थाओं के लिए : वार्षिक 1000 रुपये, आजीवन 5000 रुपये

डाक खर्च (प्रत्येक अंक के लिए) अतिरिक्त 45 रुपये

शोध समीक्षण सृजन संचार


06 **संस्तुति**

07 **संपादकीय** — धर्मवीर भारती क्यों...?

**रम्य-रचना**

11 विद्यानिवास मिश्र — फागुन की धूप-जैसे भारती
15 कैलाश सेंगर — एक इंद्रधनुष का नाम है धर्मवीर भारती
17 धनेश दत्त पाण्डेय — प्रेमा पुमर्थो महान : संदर्भ धर्मवीर भारती
25 गंगा शरण सिंह — अप्रतिम सर्जक : धर्मवीर भारती
28 शिवानी — प्रजानामनुरंजने

**स्मृति अंश**

31 पुष्पा भारती — स्मृतियों में... धर्मवीर भारती
32 सुदर्शना द्विवेदी — भारती जी : यादों में जीवंत व्यक्तित्व
37 सुधा गुप्ता — साँच की आँच में : धर्मवीर भारती
40 पुष्पा भारती — यह सुनकर आप हँसेंगे कि...

**काव्यालेख**

42 विजेन्द्रनारायण सिंह — दृष्टि-वैशिष्ट्य का यथार्थवादी कवि
49 शिवदयाल — सर्वसत्तावाद के विरुद्ध जनता की मुनादी
55 रामसुधार सिंह — साहित्य-सृजन का मानवीय धरातल
60 नरेन्द्र नाथ मिश्र — आस्था के कवि : धर्मवीर भारती
62 डॉ. जया आनंद — धर्मवीर भारती के काव्य में सहज प्रेम और सामाजिक संवेदना
67 डॉ. अंजू कुमारी — स्वप्नों-आकांक्षाओं के अमर गायक : धर्मवीर भारती
71 डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता — धर्मवीर भारती की कविताओं की वर्तमान में प्रासंगिकता

**कथायन**

78 राजेन्द्र यादव — 'गुनाहों का देवता': हिंदी उपन्यासों के साथ
87 शंकर शरण — स्मृति में गुनाहों का देवता
89 शीला मिश्रा — भविष्य के सपने और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा'
92 देवेन्द्र इस्सर — एक मुँहजोर घोड़ा और सूरज का रोशन गोला
98 अज्ञेय — जीवन के प्रति अडिग आस्था

**कहन**

100 पवन माथुर — बंद गली का आख़िरी मकान : एक संरचनात्मक विश्लेषण
105 सविता — पितृसत्तात्मक संरचना और स्त्री-शोषण
109 निर्मल वर्मा — मुक्त करुणा से आप्लावित कहानियाँ

शोध समीक्षण सृजन संचार


112 नासिरा शर्मा — भारती की कहानियाँ
120 जया केतकी — धर्मवीर भारती की प्रसिद्ध कहानियों की प्रासंगिकता

**निबंध नवनीत**

123 डॉ. श्रीराम परिहार — डॉ. धर्मवीर भारती के ललित निबंधों की संस्कृति
127 प्रेम जनमेजय — मेरे ठेले का हिमालय
134 डॉ. उषा मिश्रा — स्मृतियों के झरोखे से समय की पड़ताल

**नाट्यालेख**

138 प्रमोद भार्गव — अंधायुग में निहित है इतिहास बदलने की प्रेरणा
142 संतोष कुमार चतुर्वेदी — अंधा युग : पुरातनता और आधुनिकता का अंतर्द्वंद्व
151 डॉ. सतीश पावडे — युद्ध की विभीषिका से परे है 'अंधा युग'!
159 प्रवीण 'बनजारा' — अंधा युग : एक धार्मिक पुनर्पाठ
162 डॉ. राजेंद्र मुंढे — मराठी नाट्यपरंपरा और अंधा युग के अंत:संबंध

**संवाद-प्रिया**

164 डॉ. लक्ष्मी पाण्डेय — द्वैत-अद्वैत के बीच अस्तित्व तलाशती कनुप्रिया
175 डॉ. सरोज कुमार वर्मा — 'कनुप्रिया' का मूल्य-विमर्श: सार्थकता की तलाश

**पूर्ण-पत्रकारिता**

182 डॉ. राजेश लेहकपुरे — धर्मयुग के 'धर्म' वीर
186 हिमांशु उपाध्याय — हिंदी पत्रकारिता व साहित्य के संधिदूत : धर्मवीर भारती
188 डॉ. वृषाली चौघुले — हिंदी पत्रकारिता और धर्मवीर भारती
192 डॉ. धनंजय चोपड़ा — भारती जी ने पत्रकारिता के नए प्रतिमान गढ़े
195 सिमरन एवं डॉ. श्रीप्रकाश — धर्मवीर भारती के कथा-साहित्य और पत्रकारिता का अंतर्संबंध
199 श्रीराम दवे — सृजन-संपादन को समर्पित भारती जी

**समाहित**

201 शिवम अंतापुरिया — धर्मवीर भारती का साहित्य : नैतिक अंतर्द्वंद्व, मिथकीय पुनर्पाठ

**पत्र-साहित्य**

203 — पद्मा सचदेव, राजी सेठ , मिथिलेश्वर, जगदीश गुप्त, राजीव कुमार सक्सेना

207 **जीवन-परिधि** — **धर्मवीर भारती**

**परिशिष्ट**

209 — पुस्तकें प्राप्त हुईं

## संस्तुति

साहित्य की दुनिया में सोच-विचार, शोध-खोज और मनन-चिंतन को गतिमान करने के लिए जिस सरित-प्रवाह की आवश्यकता होती है, उसका समंदर पत्र-पत्रिकाएँ ही बनाती हैं। विचार-विमर्श की आवाजाही तथा संवाद-परिसंवाद की संरचना भी वे ही तैयार करती हैं। प्रसार के लिए साहित्यिक पत्रिकाएँ एक सशक्त माध्यम होती हैं। 'मुक्तांचल' ने लगातार इसी दिशा का अनुगमन किया है। आरंभ से लेकर अब तक के अपने साहित्यिक प्रयासों की शृंखला में 'मुक्तांचल' साहित्य के अकादमिक स्वरूप को उजागर करने के लिए प्रयासरत रहा है। 'मुक्तांचल' का धर्मवीर भारती जन्मशती अंक भी इसी महत् प्रयास की सुंदर परिणति है।

धर्मवीर भारती ऐसे लेखक रहे हैं, जिनका रचना-संसार 'मुक्तांचल' की उद्घोषणा— 'शोध, समीक्षण, सृजन और संचार' से पूर्णतः आवृत्त है। धर्मवीर भारती बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। एक अध्येता, अध्यापक, चिंतनशील समीक्षक, संवेदनशील लेखक एवं समावेशी पत्रकार की विशेषताएँ उनके व्यक्तित्व में निहित थीं, जो आज भी उनके कृतित्व में दीप्त हैं। जन्मशती के बहाने उनके समस्त कृतित्व की पड़ताल एक अनोखी मनीषा को गतिमान करती है।

भारती जी एक प्रखर विद्यार्थी रहे थे। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में स्नातकोत्तर की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर स्वर्णपदक अर्जित किया था। वे एक विचारवान शोधार्थी थे। डॉ. धीरेंद्र वर्मा के निर्देशन में उन्होंने सिद्ध साहित्य पर सारगर्भित शोध-प्रबंध तैयार किया और पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। वे एक सफल प्राध्यापक रहे। उन्होंने 'गुनाहों का देवता' और 'सूरज का सातवाँ घोड़ा' जैसे उपन्यासों तथा शताधिक कहानियों की रचना की। वे एक संवेदनशील कवि भी थे। उन्होंने 'ठंडा लोहा', 'सात गीत वर्ष', 'कनुप्रिया', 'सपना अभी भी' जैसी काव्य-रचनाएँ कीं। 'अंधा युग' उनका लिखा गीतिनाट्य है, जो बहुचर्चित रहा है। संस्मरण, यात्रा-साहित्य, रिपोर्ताज, अनुवाद, निबंध आदि साहित्य की विविध विधाओं में भी उन्होंने अपनी लेखनी चलाई है।

संपादक के रूप में भारती जी 'धर्मयुग' साप्ताहिक का सत्ताईस वर्षों तक संपादन करते रहे। सन 1960 से लेकर 1987 तक 'धर्मयुग' ने हिंदी जगत में अद्भुत लोकप्रियता प्राप्त की। धर्मवीर भारती 'धर्मयुग' के पर्याय माने जाते रहे हैं। भारती जी ने 'धर्मयुग' को समकालीन रचनाकारों के लिए एक मानक मंच बना दिया था। बीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में उभरकर आए कथाकारों एवं रचनाकारों ने कहीं-न-कहीं 'धर्मयुग' साप्ताहिक के माध्यम से अपनी पहचान बनाई और उन्हें तलाशने तथा निखारने में धर्मवीर भारती जी की प्रमुख भूमिका रही थी, इसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं हो सकती।

'मुक्तांचल' साहित्य की अकादमिक पत्रिका है, अतः उसकी अपनी सीमाएँ भी हैं, जो उसे अन्य पत्र-पत्रिकाओं से अलग करती है। आज के जमाने में विषयों का परिसीमन हो गया है। अतः साहित्यिक पत्रिका साहित्य से सरोकार रखने वाले लोगों तक सीमित हो चली है। भाषा, कला और संस्कृति से सरोकार रखने वाले लोग साहित्य से निरपेक्ष नहीं रह सकते, विशेषकर वे, जिन्होंने साहित्य के साथ रोजी-रोटी के स्तर तक निर्भरता बना ली है। परंतु विडंबना वहीं से शुरू होती है, जहाँ वे अपने पेशे की नैतिकता के साथ छल कर रहे होते हैं। अध्येता बने बगैर अध्यापन विद्यार्थियों में रुचि और रुझान तैयार करने की क्षमता नहीं रखता। साहित्य के कारखानों (महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों) में आजकल सर्जना और अनुसंधान की प्रवृत्ति का ह्रास हो रहा है। 'मुक्तांचल' जैसी पत्रिका इस रिक्तता को भरने की एक कारगर कोशिश है और इस कोशिश में सफलता के संकेत भी हैं।

इस अंक को संस्तुत करते हुए इसके संदर्भ की भी चर्चा होनी चाहिए। अस्तु, धर्मवीर भारती जी के जन्मशत वर्ष के संकेत को ध्यान में रखते हुए अतिथि संपादक डॉ. धूपनाथ प्रसाद ने 'मुक्तांचल' के विशेषांक का प्रस्ताव दिया। मैंने इस प्रस्ताव का स्वागत किया और विशेषांक के लिए जुलाई-सितंबर का अंक निर्धारित कर लिया गया। डॉ. डी. एन. प्रसाद धर्मवीर भारती साहित्य के विशेष अध्येता रहे हैं। उन्होंने भारती जी के साहित्य पर पीएच.डी. की है और संप्रति वे धर्मवीर भारती शोध पीठ के संचालक भी हैं। मनीषी संपादक ने बड़े मनोयोग से इस अंक को सँवारा है। उनका यह कार्य अप्रतिम है। 'मुक्तांचल' परिवार सुधी संपादक के योगदान के लिए हृदय से आभार व्यक्त करता है।

**संपादक**

# धर्मवीर भारती क्यों...?

एक में निपुण होना और बात है, और सर्वांग में निपुण होना कुछ और बात। विरले ही ऐसे होते हैं, जिन्हें सभी विधाओं में महारत हासिल होती है। साहित्य की सभी विधाओं में समान अधिकार प्राप्त करना सबके वश की बात नहीं है।

प्रारंभ से लेकर आज तक अनेक महत्वपूर्ण और दिग्गज साहित्यकारों ने अपनी सृजन-यात्रा किसी एक विधा से प्रारंभ की और बाद में दूसरी दिशा में महत्वपूर्ण पहचान बनाई। कुछ महत्वपूर्ण और मशहूर साहित्यिक सृजनधर्मियों ने आरंभ में अनेक विधाओं में लेखन किया, परंतु बाद के दिनों में किसी एक विधा पर केंद्रित होकर रह गए। वे साहित्य की सभी विधाओं पर समान अधिकार नहीं रख सके। बहुतों के साथ ऐसा हुआ कि उनकी एक विधा पुष्ट हुई तो दूसरी कमजोर पड़ गई। कुछ के साथ ऐसा भी हुआ कि उनकी अन्य सारी विधाएँ सामान्य स्तर पर पल्लवित हुईं, किंतु उनमें से एक विधा ने उन्हें विशिष्ट पहचान दिलाई।

परंतु विरले ही ऐसे सृजनधर्मी हुए, जिनकी बहुविध साहित्यिक साधना पर समान अधिकार रहा, जिनकी प्रत्येक विधा अपने आप में विशिष्ट शैली की प्रमाणिका बनी। ऐसे साहित्यकारों में रवीन्द्रनाथ ठाकुर, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' आदि के बाद अज्ञेय का नाम भी अग्रणी है। छायावादोत्तर साहित्यकारों में साहित्य की संपूर्ण विधाओं में महत्वपूर्ण और विशिष्ट लेखन के लिए प्रबुद्ध सृजनधर्मा डॉ. धर्मवीर भारती का नाम सर्वोपरि है।

साथ ही, साहित्य की विविध विचारधाराओं पर भी महत्वपूर्ण लेखन करना कोई धर्मवीर भारती से सीखे। कविता, कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटक, एकांकी, यात्रा-वृत्तांत, संस्मरण, शोध, आलोचना आदि की महत्वपूर्ण कृतियाँ हिंदी साहित्य को देने के साथ-साथ अनुवाद का सफल सृजन भी उनके समष्टि-बोध के समन्वित व्यक्तित्व का परिचायक है। इतना ही नहीं, उनका अनुवाद केवल गद्य तक सीमित नहीं रहा; पद्य की भाव-भंगिमा में भी उन्होंने अद्भुत आलोड़न-विलोड़न प्रस्तुत किया।

अनुवाद की यही अन्विति उनकी सफल पत्रकारिता में भी उभरकर सामने आई और हिंदी पत्रकारिता अंग्रेज़ी की मानक पत्रकारिता के कठिनतम मोड़ों से भी आगे निकल गई। तभी तो 'धर्मयुग' युग का धर्म बन गया और धर्मवीर भारती उसके पर्याय। पत्रकारिता की तमाम विधाओं में वे एक महत्वपूर्ण हस्ताक्षर और शिरोमणि सिद्ध हुए। साहित्य, विचार और चिंतन तीनों क्षेत्रों में वे समान रूप से महत्वपूर्ण बने।

'धर्मवीर भारती क्यों?' इस प्रश्न के परिशीलन में बार-बार यह बात सामने आती है कि धर्मवीर भारती को क्या माना जाए उपन्यासकार, कहानीकार, निबंधकार, कवि, नाटककार, पत्रकार, अनुवादक, आलोचक अथवा संपादक?

कोई अतिशयोक्ति न होगी कि धर्मवीर भारती ने अपेक्षाकृत कम लिखा। प्रत्येक विधा में एक-दो कृतियाँ ही दीं, किंतु प्रत्येक कृति ने साहित्य के इतिहास में अपना विशिष्ट स्थान बनाया। उनकी हर रचना मील का पत्थर सिद्ध हुई।

'गुनाहों का देवता' हो अथवा 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', दोनों उपन्यास मानवीय मूल्यों और संवेदना के अनुपम दस्तावेज़ बनकर स्थापित हुए। 'चाँद और टूटे हुए लोग' का मध्यवर्ग हो, 'मुर्दों का गाँव' के माध्यम से बंगाल के अकाल की पीड़ा हो, अथवा 'बन्द गली का आख़िरी मकान' में सामाजिक विघटन इन सबके माध्यम से डॉ. धर्मवीर भारती ने साहित्य में मानव-मूल्यों की तलाश की पहली सशक्त चेतना जगाई। 'मानव-मूल्य और साहित्य' के परिप्रेक्ष्य को उन्होंने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से उद्घाटित किया।

'ठेले पर हिमालय' लेकर चलना सबके बूते की बात नहीं है। इस प्रकार के चिंतन में निबंध-विधा के सभी आयाम पल्लवित, पुष्पित और पूर्ण विकसित दिखाई देते हैं। 'ठेले पर हिमालय' इस बात का द्योतक है कि भारती जी ने युग-बोध को साहित्य-चेतना के परिप्रेक्ष्य में देखा। समकालीन परिवेश की 'कहनी-अनकहनी' ने क्या कुछ नहीं कह दिया! अपने ही अवलोकन के लिए 'पश्यन्ती' जैसी दृष्टि अपनाना कितना कटु और सार्थक सत्य है।

सब कुछ के बावजूद डॉ. धर्मवीर भारती मूलतः हृदय से कवि हैं और उनकी काव्य-भाषा की झलक उनके संपूर्ण सृजन में देखी जा सकती है। प्रगतिवादी समीक्षा में भी उनकी काव्य-भाषा की कौंध स्पष्ट दिखाई देती है। गद्य हो या पद्य, यात्रा-वृत्तांत हो या संस्मरण, अथवा रिपोर्ट और रिपोर्ताज भारती की भाषा मूलतः काव्य-भाषा है। उनके निबंधों का नवनीत ललित है।

कविता की काया 'ठंडा लोहा' है, 'सात गीत वर्ष' है; उसके बाद 'अंधा युग' की कषाय संवेदना को 'कनुप्रिया' की कमनीयता शांति प्रदान करती है। शांति की मर्यादा को समझने के लिए युद्ध से उत्पन्न विकृतियों का चित्रण करना भी 'अंधा युग' की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। हिंसा के बाद शांति की तलाश मानवीय स्वभाव की सहज प्रवृत्ति है।

भारती इसलिए इतने सहज हैं कि वे मानव-मूल्यों के मर्म को उकेरकर आत्मानंदित होते हैं। साथ ही, मूल्यों के संकट के बीच आस्था की खोज उनकी कविता की सबसे बड़ी उपलब्धि है-